

संस्कृत रुचिरा-८

१. सुभाषितानि (श्रेष्ठ वचन)

- | | | | | | |
|----|---|----------------|--|-----------------|-----------|
| १. | (क) महीरुहा: | (ख) मधुमक्षिका | (ग) कूपखननम् | (घ) महीरुहानाम् | (ङ) तृणम् |
| २. | (क) सन्तः मधुरसूक्तरसं वचः सृजन्ति। | | (ख) मधुमक्षिका कटुकं रसं पीत्वा मधुरं समानं माधुर्यम् जनयति। | | |
| | (ग) वृक्षाः जनेभ्यः पुष्पपत्रफलच्छाया मूल वल्कल दारुभिः यच्छन्ति। | | (घ) सन्तः मधुरसूक्तरसं सृजन्ति। | | |
| | (ङ) प्रमत्तसचिवस्य नराधिपस्य राज्यं नश्यति। | | | | |
| ३. | (क) (१) साक्षात् (२) तुणम् (३) जीवमानः (४) परमं | | | | |
| | (ख) (१) मधुमक्षिका (२) माधुर्यम् (३) समसज्जन दुर्जनानां (४) मधुरसूक्तरसं | | | | |
| | (ग) चिन्तनीया प्रतिक्रिया गृहे | | | | |
| ४. | एकपदेन उत्तरत (क) यशः (ख) अर्थपरस्य (ग) पिशुनस्य (घ) सौख्यं | | | | |
| | पूर्णवाक्येन उत्तरत (क) व्यसनिनः विद्याफलं नश्यति। (ख) प्रमत्तसचिवस्य राज्यं नश्यति। | | | | |
| | निर्देशानुसारम् उत्तरत (क) नश्यति (ख) धर्मः (ग) राज्ञः (घ) कुलम् + अर्थपरस्य | | | | |
| | एकपदेन उत्तरत (क) गुणज्ञेषु (ख) निर्गुणम् (ग) सुस्वादुतोयाः (घ) नद्यः | | | | |
| | पूर्णवाक्येन उत्तरत (क) निर्गुणं प्राप्य गुणाः दोषाः भवन्ति। (ख) सुस्वादुतोयाः नद्यः समुद्रम् आसाद्य अपेयाः भवन्ति। | | | | |
| | निर्देशानुसारम् उत्तरत (क) सुस्वादु (ख) नद्यः (ग) भवन्ति + अपेयाः (घ) निर्गुणाः | | | | |
| ५. | (क) काः समुद्रम् आसाद्य अपेयाः भवन्ति। (ख) के मधुरसूक्तरसं सृजन्ति। (ग) गुणाः केषु गुणाः भवन्ति। | | | | |
| | (घ) कस्य धर्मः नश्यति। (ङ) के महीरुहेभ्यः विमुखं न यान्ति। | | | | |
| ६. | (क) खादन् + अपि (ख) सन्त + तथा + एव (ग) परैः + अपि (घ) नर + अधिपस्य | | | | |
| | (ङ) तत् + भागधेयम् (च) दैवम् + एव + अवलम्बते | | | | |

	पदम्	उपसर्गः	धातुः / शब्दः	प्रत्ययः
(क)	प्राप्य	प्र	आप्	ल्प्यप्
(ख)	श्रुत्वा	–	श्रु	क्त्वा
(ग)	ज्ञातः	–	ज्ञा	क्तः
(घ)	पीत्वा	–	पा	क्त्वा
(ङ)	जीवमानः	–	जीव	शानच

- | | | | | | | | | |
|-----------------|-----|-----------|-----|---------|-----|----------|-----|------------|
| ८. विपरीतार्थम् | (क) | कटुकम् | (ख) | अपेयः | (ग) | अर्धमः | (घ) | गुणः |
| | (ङ) | शत्रुता | (च) | असृजति | | | | |
| ९. (क) नद्यः | (ख) | रसम् | (ग) | सूक्तरस | (घ) | पशुः | (ङ) | नराधिपस्य |
| १०. कर्त्ता | (क) | यशः | (ख) | यः | (ग) | व्यसनिनः | (घ) | मधुमक्षिका |
| क्रिया | (क) | नश्यति | (ख) | विहाय | (ग) | नश्यति | (घ) | पिशुनस्य |
| ११. (क) आम् | (ख) | न | (ग) | आम् | (घ) | आम् | (ङ) | नश्यति |
| १२. (क) सः | (ख) | त्यक्त्वा | (ग) | वृक्षाः | (घ) | आकर्ण्य | (ङ) | न |
| | (छ) | उपेत्य | (ज) | जलम् | | | | लब्ध्वा |

२. बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता
(बिल की वाणी कभी भी मैंने नहीं सनी)

१. (क) शृगालः (ख) शृगालः (ग) दूरे (घ) भयसन्त्रस्तमनसां (ड) दधिपुच्छः
 २. (क) शृगालस्यः रवं श्रुत्वा सिंहः अचिन्तयत् “नूनमेषा गुहा स्वामिनः सदा समाहानं करोति! परन्तु मदभयात् न किञ्चित् वदति”।
 (ख) सिंहः शृगालस्य आहानम् अकरोत्। (ग) सिंहस्य उच्चर्जनेन अन्येषपि पशवः भयभीताः अभवन्।

- (घ) सिंहस्य पदपद्धतिं दृष्ट्वा शृगालः अचिन्तयत् – “अहो विनष्टोऽस्मि। नूनम् अस्मिन् बिले सिंहः अस्तीति तर्कयामि। तत् किं करवाणि”?
- (ङ) सिंहः क्षुधार्थः इतस्ततः अभ्रमत्।

३. एकपदेन उत्तरत (क) खरनखरः (ख) वने (ग) सूर्यास्त समये (घ) गुहायाम्
 पूर्णवाक्येन उत्तरत (क) सिंहस्य पदपद्धतिः गुहायां प्रविष्टा दृश्यते।
 (ख) महतीं गुहां दृष्ट्वा सिंहः अचिन्तयत् “नूनम् एतस्यां गुहायां रात्रौ कोऽपि जीवः आगच्छति। अतः अत्रैव निगृहो भूत्वा तिष्ठामि”।
 निर्देशानुसारम् उत्तरत (क) महतीम् (ख) सिंहः (ग) अत्र + एव (घ) वहिस् / बहिर्
४. (क) सिंहः कीदृशीम् गुहाम् अपश्यत्? (ख) कस्याः स्वामी दधिपुच्छः नामकः शृगालः आसीत्?
 (ग) एषा गुहा कस्य सदा समाहानं करोति? (घ) के भयभीताः अधावन्? (ङ) कीदृशः शृगालः दूरं पलायितः?
५. (१) कुरुते (२) अनागतं (३) संस्थस्य (४) मे (५) विलस्य
 ६. (क) इतः + ततः (ख) बहिः + आगता (ग) एतत् + श्रृत्वा (घ) कः + अपि (ङ) करोति + अनागतम्
 ७. (क) आम् (ख) आम् (ग) न (घ) आम् (ङ) आम्

	पदम्	उपसर्गः	धातुः / शब्दः	प्रत्ययः
(क)	प्रविश्य	प्र	विश्	ल्यप्
(ख)	श्रृत्वा	-	श्रु	क्त्वा
(ग)	विचिन्त्य	वि	चिन्त्	ल्यप्
(घ)	दृष्ट्वा	-	दृश्	क्त्वा
(ङ)	कर्तुम्	-	कृ	तुमुन्
	विनष्टः	वि	नश्	क्त

९. (क) एकस्मिन् वने खरनखरः सिंहः प्रतिवसति स्म। (ख) सः गुहायां निगृहो भूत्वा अतिष्ठत्।
 (ग) एतस्मिन् अन्तरे गुहायाः स्वामी दधिपुच्छः नाम शृगालः समागच्छत्। (घ) सिंहपदपद्धतिं दृष्ट्वा शृगालः चिन्तयति यत् बिले सिंहः अस्ति।
 (ङ) यदि त्वं मां न आह्वयसि तर्हि अहं द्वितीयं बिलं यास्यामि। (च) नूनमेषा गुहा स्वामिनः सदा समाहानं करोति।
 (छ) सिंहस्य प्रतिध्वनिना गुहा उच्चैः शृगालम् आह्वयत्। (ज) शृगालः ततः दूरं पलायितः।
१०. (क) दिने (ख) तत्र (ग) प्रविष्टा (घ) सूर्योदयः (ङ) नीचैः
 ११. (क) सदा (ख) परितः (ग) विना (घ) यथा , तथा (ङ) नूनम्
 १२. (क) विचिन्त्य (ख) अवलोक्य (ग) गमिष्यामि (घ) कम्पनम् (ङ) बुधुक्षितः
 (च) नियमः

३. डिजीभारतम् (डिजिटल भारत)

१. (क) मानवस्य (ख) प्राचीनकाले (ग) संगणकनामेन (घ) कर्गदोद्योगे (ङ) वित्तकोशस्य
 २. (क) आपणे वस्तुक्रयार्थम् रुप्यकाणां अनिवार्यता न भविष्यति।
 (ख) चिकित्सालये उपचारार्थं रुप्यकाणाम् आवश्यकता अद्य नानुभूयते।
 (ग) सङ्गणकस्य अधिकधिक-प्रयोगेणा वृक्षाणां कर्तने न्यूनता भविष्यति।
 (घ) प्राचीनकाले तालपत्रोपरि, भोजपत्रोपरि च लेखनकार्यम् आरब्धम्।
 (ङ) सर्वाणि पत्राणि चलदूरभाषयन्ते ‘ईमेल’ इति स्थाने सुरक्षितानि भविन्ति।
३. एकपदेन उत्तर (क) रुप्यकाणाम् (ख) नूतनज्ञानान्वेषणार्थम्
 पूर्णवाक्येन उत्तर (क) लेखनार्थम् अभ्यासपुस्तिकायाः कर्गदस्य वा नूतनज्ञानान्वेषणार्थम् शब्दकोशस्याऽपि आवश्यकता न भविष्यति।
 निर्देशानुसारम् उत्तरम् (क) भू धातु (ख) अनुभूतिः (ग) यदा, न, अपि (घ) परिचित
४. (क) केषाम् एव मनोगतानां भावानां कर्गदोपरि लेखनं प्रारब्धम्? (ख) कस्या: प्रगतियात्रा पुनरपि अग्रे गता?
 (ग) अनेन कस्याः दिशि महान् उपकारो भविष्यति? (घ) चिकित्सालये किमर्थम् रुप्यकाणाम् आवश्यकता न अनुभूयते?
 (ङ) केन-शुल्कम् प्रदातुं शक्यते?

	पदम्	उपसर्गः	धातुः / शब्दः	प्रत्ययः
1.	कर्तुम्	-	कृ	तुमन्
2.	प्रदातुम्	प्र	दा	तुमन्
3.	दातुम्	-	दा	तुमन्
4.	आदाय	आ	दा	ल्यप्
5.	पठनार्थ	-	पट्	अर्थम्

४. सदैव पूरतो निधेहि चरणम् (सदैव आगे कदम बढ़ाओ)

	पदम्	मूलशब्द	विभक्ति:	वचनम्
क	गिरिशिखरे	गिरिशिखर	सप्तमी	एक
ख	पशवः	पशु	प्रथमा	बहु
ग	पथि	पथ	सप्तमी	एकवचन
घ	पाषाणाः	पाषाण	प्रथमा	बहुवचन
ड़	चरणम्	चरण	द्वितीया	एकवचन

६. (क) परकीयम् (ख) अवतरणम् (ग) सुकरम् (घ) समाः
 ७. (क) विना + एव (ख) नग + आरोहणम् (ग) यदि + अपि (घ) तथा + अनुरक्तिम्
 ८. (क) अग्रतः (ख) निजम् (ग) त्यज (घ) निरन्तरम् (ङ) असामान्याः
 (च) मार्गे

५. कण्टकेनैव कण्टकम् (काँटे को काँटे से ही दूर किया जाता है)

१. (क) चञ्चलः नदीजलम् अपृच्छत्। (ख) लोमशिका बदरी-गुल्मानां पृष्ठे निलीना आसीत्।
 (ग) मानवाः वृक्षाणाम् छायायां विरमन्ति। (घ) चञ्चलः वृक्षम् उपगम्य अपृच्छत्।
 (ड) “अहह् मातृस्वसः अवसरे त्वं समागतवती” इति चञ्चलः कथयति।

२. (क) व्याघ्रः जलं पीत्वा पुनः व्याधमवदत्, “शमय पे पिपासा। साम्प्रतं बुभुक्षितोऽस्मि। इदानीम् अहं त्वां खादिष्यामि”।
 (ख) जनाः नद्यां स्नानं कुर्वन्ति, वस्त्राणि प्रक्षालयन्ति तथा च मल-मुत्रादिकं विसृज्य निर्वतन्ते।
 (ग) वृक्षः व्याधं अवदत्, मानवाः अस्माकं छायायां विरमन्ति। अस्माकं फलानि खादन्ति, पुनः कठरैः प्रहृत्य अस्मध्यं सर्वदा कष्टं ददति।
 (घ) लोमशिका चञ्चलमुपसृत्य कथयति – “का वार्ता? माम् अपि विज्ञापया”
 (ड) चञ्चलः लोमशिकायै निखिलां कथां न्यवेदयत्।
 (च) ‘सम्प्रति पुनः पुनः कूर्दनं कृत्वा दर्शय’ इति लोमशिका व्याघ्रम् प्रति कथयति।

३. एकपदेन उत्तरत् (क) चञ्चलः (ख) व्याघ्रः (ग) वने (घ) जालात्
पूर्णवाक्येनम् उत्तरत् (क) भो मानव! कल्याणं भवतु ते। यदि त्वं मां मौचयिष्यसि तर्हि अहं त्वां न हनिष्यामि।
(ख) पक्षिमृगादीनां ग्रहणेन स्वीयां जीविकां निर्वाहयति स्म।
- निर्देशानुसारम् उत्तरत् (क) व्याघ्राय (ख) 'अन्यस्मिन्' (ग) क्लान्तः (घ) रात्रौ
४. (क) व्याधस्य जाले कः बद्धः आसीत्। (ख) व्याघ्र कीदृशः आसीत्। (ग) कस्मिन् एकः व्याघ्र बद्धः आसीत्।
(घ) व्याधः व्याघ्रं कस्मातः बहिः निरसारयत्। (ड) चञ्चलः केषाम् ग्रहणेन जीविकां निर्वाहयति स्म।
(च) जनाः कस्याम् स्नानं कुर्वन्ति।
५. (क) कुत्र + अपि (ख) नुभुक्षित + अस्मि (ग) तथा + एव (घ) सः + अवदत् (ड) प्रति + अवर्तत
- ६.
- | | पदम् | उपसर्गः | धातुः | प्रत्ययः |
|-----|-----------|---------|-------|----------|
| (क) | विस्तीर्य | वि | स्तृ | ल्यप् |
| (ख) | भूत्वा | - | भू | क्त्वा |
| (ग) | पीत्वा | - | पा | क्त्वा |
| (घ) | आनीय | आ | नी | ल्यप् |
| (ड) | कृत्वा | - | कृ | क्त्वा |
| (च) | दृष्ट्वा | - | दृश् | क्त्वा |
| (छ) | खादितुम् | - | खाद् | तुमुन् |
७. (क) मुक्तः (ख) अधर्मः (ग) सायम् (घ) दूरे (ड) अपसृत्य (च) पुण्यम्
८. (क) हत्वा (ख) कथितम् (ग) सम्पूर्णाम् (घ) कपटम् (ड) प्रार्थितवान् (च) निरन्तरम्
९. (क) आसीत् कश्चित् चञ्चलो नाम व्याधः। (ख) एकदा सः वने जालं विस्तीर्य ग्रहम् आगतवान्।
(ग) तदा सः व्याधः च्याघ्रं जालात् बहिः निरसारयत्। (घ) चञ्चलः वृक्षम् उपगम्य अपृच्छत्।
(ड) समीपे एका लोमशिका बद्री-गुलमानां पृष्ठे निलीना एतां वार्ता शृणोति स्म।
(च) लोमशिका चञ्चलम् आकथयत्-बाढम्। त्वं जालं प्रसारय। (छ) अनारतं कूदनेन सः श्रान्तः अभवत्।
(ज) जाले पुनः तं बद्धं दृष्ट्वा व्याधः प्रसन्नो भूत्वा गृहं प्रत्यागच्छत्।
१०. कः/ का - लोमशिका चञ्चलः व्याघ्रः नदीजलम् लोमशिका
कम्/ काम् - चञ्चलम् वृक्षम् व्याधम् चञ्चलम् चञ्चलम्
११. (क) आखेटकः (ख) परिश्रान्तः (ग) त्यक्त्वा (घ) उचितम् (ड) समीपं गत्वा

६. गृहं शून्यं सुतां विना (बेटी के बिना घर शून्य)

१. (क) चिकित्सिकां (ख) त्रिवर्षीया (ग) कार्यालये (घ) सांध्यकाले (ड) राकेशः
२. (क) शालिनी जनकः मनुस्मृते: पंक्तिम् उद्धरति स्म। (ख) "यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
(ग) भ्रातृजायायाः स्वास्थ्यं समीचीनं न आसीत्। (घ) राकेशः सायं प्रातः देवीं स्तुतीं करोति।
(ड) राकेशः सायं प्रातः देवीं स्तुती करोति।
३. एकपदेन उत्तरत् (क) ग्रीष्मावकाशे (ख) मालायाः (ग) प्रसन्नमनसा (घ) तस्याः/ शालिन्याः
पूर्णवाक्येन उत्तरत् (क) 'रात्रौ सर्वैः सह भेजनमेव करिष्यामि इति शालिनी मालां प्रति कथयति।
(ख) यत्र नार्यः पूज्यन्ते तत्र देवताः रमन्ते।
- निर्देशानुसारम् उत्तरत् (क) मालायै (ख) दिने/ दिवसे (ग) अहम् (शालिनी) कर्तृपदम्
(घ) खलु/ हि
४. (क) राकेशः काम् लालयति? (ख) अम्बिका कस्य क्रोडे उपाविशति? (ग) राकेशः कस्याः तिरस्कारं करोति?
(घ) राकेशः काम् प्रति प्रश्नवाचिकां दृष्टिं क्षिपति? (ड) अधुना कस्य आवश्यकता अस्ति?
५. (क) सहसा + एव (ख) उद्धिग्नः + अस्मि (ग) भोजनकाले + अपि (घ) मौनमेव + आश्रयति
(ड) लज्जितः + च + अस्मि (च) सत् + मार्ग

	पदम्	उपसर्गः	धातुः	प्रत्ययः
(क)	समागता	सम्	गम्	क्त
(ख)	चिन्तयितुम्	-	चिन्त्	तुमुन्
(ग)	कृतवती	-	कृ	तव्यत्
(घ)	प्रक्षाल्य	प्र	-	ल्यप्
(ङ)	ज्ञातुम्	-	ज्ञा	तुमुन्

७. (क) पुरा (ख) सत्कारः (ग) अबला (घ) युष्माकम् (ङ) वरिष्ठा
 ८. (क) मात्रा (ख) कलमेन (ग) नेत्रेण (घ) द्विचक्रिकया (ङ) पादेन
 ९. (क) कर्ता - (क) अहम् (ख) शालिनी (ग) भ्राता (घ) शालिनी (ङ) अहम्
 क्रिया - (क) पश्यामि (ख) आगच्छति (ग) आगच्छति (घ) ददाति (ङ) स्वीकरोमि
 १०. (क) सुता (ख) सम्प्रति (ग) अनादरः (घ) रिपुः (ङ) सार्धम्

७. भारतजनताऽहम् (में भारत की जनता हूँ)

१. (क) कुसुसात् (ख) समस्ते संसारे (ग) अध्यात्मसुधातटिनी-स्नानैः
 (घ) विश्वस्मिन् जगति (ङ). विश्वस्मिन् जगति
 २. (क) गीतैः, नृत्यैः काव्यैः समं जगत् मुग्धम् अस्ति। (ख) अहं अभिमानधना विनयोपेता, शालीना भारतजनताऽहम्।
 (ग) अहं वसुन्धरां कुटुम्बं मन्ये। (घ) अहं विश्वस्मिन् जगति गता अस्मिं।
 (ङ) अतिथिः मह्यं देवा अस्ति।
 ३. एकपदेन उत्तरत (क) दुर्बलतायाः (ख) मैत्री
 पूर्णवाक्येन उत्तरत (क) अहं मित्रस्य चक्षुषा संसारे पश्यन्ती
 निर्देशानुसार उत्तरत(क) भारतजनतायै (ख) शत् (ग) संसारम् (ङ) प्रकृतिः + अस्ति
 ४. (क) कः उत्सवप्रिया अस्मि। (ख) समं जगत् मम कैः मुग्धम् अस्मि। (ग) अहं कस्मात् कठिना भारतजनताऽस्मि।
 (घ) अहं वसुन्धराम् किम मन्ये। (ङ) अहं कीदृशी/का भारतजनताऽस्मि
 ५. (क) गीतैः + मुग्धं (ख) प्रकृतिः + अस्ति (ग) गताहम् + अस्मि (घ) भारतजनता + अहम्
 (ङ) कुलिशात् + अपि
 ६. (क) कुसुमादपि (ख) काव्यमुग्धं, रसभरिता (ग) समस्ते , कुटुम्बं (घ) गताहमस्मि जगति
 (ङ) परिपूता
 ७. (क) कल्याणम् (ख) नदी (ग) जगति (घ) पुष्पम् (ङ) कोमला

८. संसारसागरस्य नायकाः

१. (क) गजपरिमाणम् (ख) तडागाः (ग) गजधरः (घ) राजस्थानस्य (ङ) अशेषे देशे
 २. (क) गजधरेभ्यः कार्यसमाप्तौ वेतनानि अतिरिच्य गजधरेभ्यः सम्मानमपि प्रदीयते स्म।
 (ख) एककं दशकं च आहत्य शतकं सहस्रं वा रचयतः। (ग) नूतनसमाजस्य मनसि इयमपि जिज्ञासा नैव उद्भूता।
 (घ) गजधराः नवनिर्माणस्य योजनां प्रस्तुत्वन्ति स्म, आकलयन्ति स्म, उपकरण भारान् सङ्गृहणन्ति स्म।
 (ङ) गजधरः इति शब्दः तडाग निर्मातृणां सादरं स्मरणार्थम्।
 ३. एकपदेन उत्तरत (क) गजधराः (ख) गजपरिमाणं (ग) राजस्थानस्य (घ) गजपरिमाणम्
 पूर्णवाक्येन उत्तरत (क) यः गजपरिमाणं धारयति स गजधरः। (ख) गजधरः इति शब्दः तडागनिर्मातृणां सादरं स्मरणार्थम्।
 निर्देशानुसारम् उत्तरत (क) अधुना (ख) अद्य, एव (ग) शब्दः (घ) गजधरः
 ४. (क) के वास्तुकाराः आसन्? (ख) के योजनां प्रस्तुवन्ति स्म? (ग) कस्मिन्/कुत्र तडागाः निर्मायन्ते स्म?
 (घ) गजधरः किम् धारयति? (ङ) गजधरः कस्य गाम्भीर्य मापयेत्।
 ५. (क) शब्दः + अयम् (ख) स्मरण + अर्थम् (ग) अद्य + अपि (घ) किम् + चित् (ङ) सहसा + एव
 ६. (क) देशे (ख) गजधराः (ग) शब्दः (घ) कार्याणि (ङ) प्रविधिः (च) समाजेन
 ७. (क) पुरातनः (ख) दाने (ग) प्रदीयते (घ) नष्टा (ङ) समर्थाः

६. (क) अकस्मात् (ख) ज्ञातुमिच्छा (ग) सुविष्ठता: (घ) अन्यथा (ङ) प्राक्
 (च) समग्रे (छ) सम्मानिता: (ज) प्रतिग्रहणे

९. सप्तभगिन्यः (सात बहनें)

१. (क) चतुर्विंशतिः (ख) सप्त (ग) वंशवृक्षाणाम् (घ) स्वदेशस्य राज्यनाम् (ङ) अद्भुयं, मत्रयं, न, त्रि सप्तभगिन्यः
 २. (क) सप्तभगिन्य इति शब्दः सर्वप्रथम विगतशताब्दस्य द्वि सप्ततितमे वर्षे प्रयुक्तम्।
 (ख) अस्य प्रदेशस्य अन्तराराष्ट्रियख्यातिम् प्राप्तः उद्योगः वंशः अस्ति।
 (ग) प्रयोगेऽयं प्रतीकात्मको वर्तते। सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्यानां सम्पाद इमानि उक्तोपाधिना प्राथितानि।
 (घ) अस्मिन् प्रदेशे वंशवृक्षाणां प्राचुर्यं विद्यते।
 (ङ) एतानि राज्यानि भ्रमणार्थं स्वर्गसदृशानि सन्ति।
 (च) पुष्प-स्तबकसदृशानि सप्त भगिन्यः भारतगृहे विराजन्ते।
३. एकपदेन उत्तरत (क) भगिनी (ख) सप्तभगिन्यः (ग) शरीरण (ङ) बहवः
 पूर्णवाक्येन उत्तरत (क) गरो-खासी-नगा-मिजो-प्रभृतयः वहवः जनजातीयाः निवसन्ति।
 (ख) शरीरण ऊर्जस्विनः एतत्प्रादेशिका बहुभाषाभिः समन्विताः, पर्वपरम्पराभिः परिपूरिताः, स्वलीला-कलाभिश्च निष्णाताः सन्ति।
 निर्देशानुसारम् उत्तरत(क) परमकल्याणकारी (ख) निष्णाताः
४. (क) भगिनी प्रदेशोऽयं कस्मै समीचीनः। (ख) एतानि राज्यानि भारतवृक्षे कानि विराजन्ते। (ङ) केषम् समूहः भगिनीसप्तके ज्ञायते।
 (घ) अस्मिन् प्रदेश बहवः काः निवसन्ति। (ड) कति केन्द्रशासितप्रदेशाः सन्ति।
५. (क) सम्यक् + जानाति (ख) प्रथितः + अस्ति (ग) यदि + अपि (घ) प्राचीन + इतिहासे
 (ङ) बहु + आकर्षकः (च) महत्त्व + आधायिनी
६. (क) बहवः (ख) परमकल्याणकारी (ग) श्रुतमधुरः (घ) स्वर्गसदृशानि
 (ङ) अयम् (च) इमाः
७. (क) न्यूनता (ख) विघटनम् (ग) पराधीनाः (घ) लघूनि (ङ) नवीनम्
८. (क) प्रिया (ख) विशालानि (ग) समाहारः (घ) शोभनम् (ङ) सम्पूर्णः
९. प्रकृतिः प्रत्ययः
 (क) पट् + अनीयर
 (ख) गम् + तुमुन्
 (ग) दृश् + क्त
 (घ) कृ + क्त
 (ङ) ज्ञा + तुमुन्
१०. मूलधातुः लकारः पुरुषः वचनम्
 (क) चल् लोट् प्रथम एकवचनम्
 (ख) अस् लट् उत्तम एकवचनम्
 (ग) इष्/ इच्छ लट् उत्तम एकवचनम्
 (घ) गम् लट् प्रथम एकवचनम्
 (ङ) वट् लट् प्रथम द्विवचनम्
११. (क) स्वसा (ख) प्रसिद्धः (ग) निपुणाः (घ) अवगन्तुम् (ङ) सह
 (च) बाहुल्यं

१०. नीतिनवनीतम् (अच्छी बातों का संग्रह)

- | | | | | | |
|----|--|---------------------------|--|--------------------|--------------------|
| १. | (क) दृःख्यम् | (ख) दृष्टिपूतम् | (ग) विपरीतम् | (घ) समाचरेत् | (ङ) आत्मवशम् |
| २. | (क) संसारे समासेन सुख दुःखयोः लक्षणं विद्यात्। | (ख) | वस्त्रं पूतं जलं पिबेत्। | | |
| | (ग) त्रिषु तुष्टेषु सर्वं तपः समाप्तते। | (घ) | यत्कर्म कुर्वतोऽस्य स्यात्परितोषोऽन्तरात्मनः एतत् कर्म प्रयत्नेन कुर्वीत्। | | |
| | (ङ) मातापितरौ क्लेशं सहेते। | | | | |
| ३. | (क) नित्यं वृद्धोपसेविनः कानि वर्धन्ते? | (ख) | आत्मवशं किम् भवति? | | |
| | (ग) कर्म कस्य परितोषाय कर्त्तव्यम्? | (घ) | सर्वदा मातापित्रोः आचार्यस्य च किम् कुर्यात्? | | |
| | (ङ) मातापितरौ कस्मिन् क्लेशं सहेते? | | | | |
| ४. | क. एकपदेन उत्तरत - (क) चत्वारि | (ख) बालम् | (ग) अभिवादनशीलस्य | (घ) आयुः | |
| | पूर्णवाक्येन उत्तरत- (क) आयुर्विद्यायशोबलम् चत्वारि गुणानि वर्धन्ते। | (ख) | आयुष्मान् वृद्धोपसेविनः भवति। | | |
| | निर्देशानुसारम् उत्तरत-(क) अभिवादनशीलः | (ख) यशः | (ग) वृद्ध + उपसेविनः | (घ) तस्य | |
| ख. | एकपदेन उत्तरत - (क) माता-पितरौ | (ख) नृणाम् | | | |
| | पूर्णवाक्येन उत्तरत- तस्य (मातापित्रौः) निष्कृतिः कर्तुं वर्षशतैरपि न शक्या अस्ति। | | | | |
| | निर्देशानुसारम् उत्तरत-(क) माता-पितरौ | (ख) वर्षशतैः + अपि | (ग) सम्भवे | (घ) अपि | |
| ५. | क. (i) सर्वं | (ii) आत्मवशं | (iii) समासेन | (iv) लक्षणं | |
| ख. | (i) आचार्यस्य | (ii) प्रियं | (iii) त्रिषु | (iv) एव | |
| ग. | (i) पादं | (ii) वस्त्रपूतं | (iii) सत्यपूतं | (iv) पूतं | |
| ६. | (क) यशः + बलम् | (ख) वृद्धः + उपसेविनः (ग) | तयोः + नित्यं | (घ) वर्षशतैः + अपि | (ङ) कुर्वतः + अस्य |
| ७. | (क) न | (ख) आम् | (ग) आम् | (घ) न | (ङ) न |
| ८. | (क) जन्मावसरे | (ख) सन्तोषः | (ग) कष्टम् | (घ) पवित्रम् | (ङ) मनुष्याणाम् |

१२. सावित्री बाईफूले (सावित्री बाई फूले)

१. (क) 1831 तमे ख्रिस्ताब्दे (ख) लक्ष्मीबाई; खण्डोजी च (ग) ज्योतिबा फुले महोदयेन (घ) 1897 तमे ख्रिस्ताब्दे

२. (क) ज्योतिबा फुले स्त्रीशिक्षाया: प्रबलः समर्थकः आसीत्। (ख) विधवानां शिरोमुण्डनस्य सा विरोधम् अकरोत्।
 (ग) 'महिला सेवामण्डल' शिशुहत्याप्रतिबन्धकप्रहम्' इत्यादीनां संस्थानां स्थापनायां फुले दम्पत्योः अवदानं महत्त्वपूर्णम् आसीत्।
 (घ) दुर्भिक्षकाले सा पीडितजनानां सेवाम् अकरोत्।
 (ङ) उत्पीडितानां समुदायानां स्वाधिकारान् प्रति जागरणम् उद्देश्यम् आसीत्।

३. एकपदेन उत्तरत - (क) सामाजिक कुरीतीनां (ख) 1851 तमे ख्रिस्ताब्दे (ग) निजगृहं (घ) सावित्री पूर्णवाक्येन उत्तरत - (क) सावित्री तड़ागं दर्शयित्वा अकथयत्-यथेष्टं जलं नयत।
 (ख) सावित्री उच्चवर्गीयाः उपहासं कुर्वन्तः कूपात् जलोदधरणं अवारयन् सावित्रि एतत् अपमानुं सोहुं नाशक्नोतो।
 निर्देशानुसारम् उत्तरत- (क) सावित्रै (ख) सावित्रै (ग) नार्यः
 (घ) विशेषण-ताः / विशेष्य-स्त्रियः

४. (क) कासां शिरोमुण्डनस्य सावित्री विरोधम् अकरोत्। (ख) सावित्री स्वविद्यालये कन्याभिः सह कीदृशम् आलपति।
 (ग) कस्य नायांवा नाम्निस्थाने सावित्री अजायत। (घ) सा कस्मात् न विचलति।
 (ङ) महाराष्ट्रस्य कतमा महिला शिक्षिका सावित्री बाईफुले आसीत्।

५. (क) न + अस्ति (ख) कः + चित् (ग) अध्ययन + अभिलाषा (घ) सार्वजनिकः + अयम्
 (ङ) जल + उद्धरणम् (च) शिरः + मुण्डनस्य

६. (क) विरोधम् (ख) समर्थकः (ग) शिक्षिका (घ) पाठशालायाः
 (ङ) अध्ययनम् (च) तड़ागः

७. (क) दत्त्वा (ख) साध्यम् (ग) विपक्षः (घ) अन्तिमा
 (ङ) निधनं गता (च) उच्चवर्गीयाः (छ) विषमता

८. (क) अपमानः (ख) सदा (ग) समीपे (घ) पठनम्
 (ङ) कथितौ (च) जन्म अलभूत

९. (क) सावित्री बाईफूले महाराष्ट्रस्य प्रथमा महिला शिक्षिका आसीत्।
 (ख) 1831 तमे खिस्ताब्दे महाराष्ट्रस्य नायगाँव-नाम्नि स्थाने सावित्री अजायत।
 (ग) सावित्रा: विवाहसमये सा नववर्षीया आसीत्।
 (घ) सा आड्ग्लभाषाया: अध्ययनम् अपि कृतवती।
 (ङ) 1848 तमे खिस्ताब्दे कन्यानां कृते प्रदेशस्य प्रथमं विद्यालयम् आरभत।
 (च) सामाजिक-कुरीतीनां सावित्री मुखरं विरोधम् अकरोत्।
 (छ) सावित्री असाध्यरोगेण ग्रस्ता 1897 तमे खिस्ताब्दे निधनं गता।
 (ज) सावित्रा: द्वयोः काव्यसङ्कलनयोः नाम्नि इति स्तः: (1) 'काव्ये फुले' (2) 'सुबोधरत्नाकर' इति स्तः।
१०. (क) केशकर्तकः (ख) अक्लान्तम् (ग) परम्परायाम् (घ) स्त्रियः (ङ) समारब्धः
११. (क) विद्यते (ख) विवाहिता (ग) सहनार्थम् (घ) गृहीत्वा

१२. कः रक्षति कः रक्षित (कौन रक्षा करता है कौन रक्षा योग्य है।)

१. (क) वैभवः (ख) परमिन्द्रः (ग) आरक्षिविभाग जनाः (घ) पर्यावरणेन (ङ) सर्वे
२. (क) बालाः नदीतीरे अवकरभाण्डारं दृष्ट्वा वार्तालापं कुर्वन्ति।
 (ख) बहुभूमिक भवनानां, भूमिगतमार्गाणां विशेषतः मैट्रोमार्गाणां उपरि गमित सेतूनाम् मार्गे इत्यादीनां निर्माणाय वृक्षाः कर्त्यन्ते।
 (ग) रोजलिन बालैः सह अकरं अवकर कण्डोले पातयति।
 (घ) अस्माभिः पित्रो शिक्षकाणां सहयोगेन प्लास्टिकस्य विविधपक्षाः विचारणीयाः।
 (ङ) वैभवः विद्युदभावेन पीडितः बहिरागतः।
३. एकपदेन उत्तरत - (क) धेनुः (ख) कदलीफलानि (ग) मार्गात् (घ) महती क्षतिः
 पूर्णवाक्येन उत्तरत - (क) अधुना प्लास्टिक निर्मितानि वस्तूनि एव प्राप्यन्ते।
 (ख) पर्वं तु कार्पासेन चर्मणा, लौहेन, लाक्ष्या, काष्ठेन वा निर्मितानि वस्तूनि प्राप्यन्ते स्म।
 निर्देशानुसारम् उत्तरत - (क) बालाः (ख) दृष्ट्वा (ग) क्षतिः (घ) एव, तत्र
४. (क) कुत्रु/ कस्मिन् निमिज्जिताः बाला प्रसन्नः भवन्ति। (ख) मार्गे किम् दृष्ट्वा बालाः परस्परं वार्तालापं कुर्वन्ति।
 (ग) वैभवः प्रचण्डोष्मणा पीडितः गृहात् निष्क्रामति। (घ) प्लास्टिकं कस्य हानिकरं भवति।
 (ङ) पर्यावरण सह के अपि रक्षणीयाः।
५. (क) बहिः + आगत्य + अपि (ख) स्मृतिपथम् + मायाति। (ग) सृष्टिः + निखिला
 (घ) इदानीम् + एव + अवगच्छामि (ङ) सर्वथा + अवरुद्धः
६. (क) आम् (ख) आम् (ग) आम् (घ) आम् (ङ) न (च) आम्
७. (क) प्रकृतिः (ख) वारिदः (ग) तूलेन (घ) लाक्षातत्वेन (ङ) अवलोक्य
८. उपसर्गः धातुः प्रत्यय
 (क) आ हु ल्यप्
 (ख) - कृ क्त्वा
 (ग) - रक्ष् अनीयर
 (घ) आ गम् ल्यप्
 (ङ) - दृश् ल्यप्

१३. क्षितौ राजते भारतस्वर्णभूमिः (भारतस्य स्वर्णभूमि इस धरती पर शोभायमान हो रही है।)

१. (क) खाद्यान्नभाण्डं (ख) राष्ट्ररक्षारतानां (ग) नदीनां (घ) अणूनां (ङ) क्षितौ
२. (क) इयं धरा शस्यैः स्वर्णवद् भाति (ख) इयं वने दिग्गजानां धरा अस्ति (ग) इयं धरा प्रबन्धे युतानाम् अस्ति।
३. (क) सदैव + अस्ति (ख) शस्यैः + धरा + इयम् (ग) पर्वणाम् + उत्सवानां (घ) तटीनाम् + इयम्
 (ङ) पुरित + इयम्
४. (क) खाद्यन्नभाण्डं / यत्र (ख) पृथिव्यस्त्रघोरैः / महाशक्तिभिः (ग) धरेयं / राजते (घ) तथा / तटीनामियं

५.	शब्द	विभक्ति	वचनम्		
(क)	कवि	षष्ठी	बहुवचन		
(ख)	क्षिति	सप्तमी	एकवचन		
(ग)	वन	सप्तमी	एकवचन		
(घ)	शस्य	तृतीया	बहुवचन		
(ङ)	धरा	प्रथमा	एकवचन		
६.	(क) अमृतम्	(ख) वसुन्धरा	(ग) वैद्य:	(घ) पर्वतः	(ङ) मयूरः

१४. आर्यभटः (आर्यभट)

१.	(क) आर्यभटः	(ख) नौकाम्	(ग) पूर्व दिशायां	(घ) पृथिवी	(ङ) सूर्यः
२.	(क) तस्य (आर्यभटस्य) सिद्धन्ताः उपेक्षिता		(ख) समाजे सामान्यजनाः नूतनानां विचारणां स्वीकारे काठिन्यं अनुभवन्ति।		
	(ग) आर्यभटः पण्डितमन्यानाम् उपहास पात्रो जातः।		(घ) पृथिवी स्थिरा वर्तते इति आर्यभटेन प्रत्यादिष्टा।		
	(ङ) आर्यभटः गणित परम्परायाः विज्ञान परम्परायाः च शिखरः पुरुषः आसीत्।				
३.	एकपदेन उत्तरत - (क) ४७६ तमे खिस्ताद्वे	(ख) आर्यभटीयम्	(ग) पाटलिपुत्रः	(घ) त्रयोविंशति तमे वर्षीय	
	पूर्णवाक्येन उत्तरत - (क) आर्यभटस्य योगदानं गणित ज्योतिषा क्षेत्रे वर्तते।	(ख) उत् + लिखितम्	(ग) आर्यभटः फलितज्योतिष शास्त्रे न विश्वसिति स्म।		
	निर्देशानुसारम् उत्तरत - (क) निकषा	(ख) उत् + लिखितम्	(ग) तस्य (आर्यभटस्य)	(घ) आर्यभटाय	
४.	(क) का स्वकीये अक्षे घूर्णति।	(ख) पाटलिपुत्रम् कस्य कर्मभूमिः आसीत्।	(ग) कस्य योगदानं गणितज्योतिषा सम्बद्धं वर्तते।		
	(घ) आधुनिकैः वैज्ञानिकैः कस्य सिद्धान्ते समादरः प्रकटितः।		(ङ) पाटलिपुत्रं निकषा आर्यभटस्य का आसीत्।		
५.	(क) सूर्यः + अचलः	(ख) सिद्धान्तः + अयम्	(ग) ग्रन्थः + अयम्	(घ) तथा + एव	
	(ङ) प्रति + आदिष्टा				
६.	(क) पृथिव्याम्	(ख) चन्द्रस्य	(ग) विचारणाम्	(घ) वैज्ञानिकैः	(ङ) पृथिव्याः
७.	मूलधातुः	लकारः	पुरुष	वचनम्	
	(क) अस्	लङ्	प्रथम	एकवचनम्	
	(ख) भू	लट्	प्रथम	एकवचनम्	
	(ग) अव + गम्	लट्	प्रथम	एकवचनम्	
	(घ) भू	लङ्	प्रथम	एकवचनम्	
	(ङ) अनु + भू	लट्	प्रथम	बहुवचनम्	
८.	(क) द्रौ	(ख) पुरातनः	(ग) चलः	(घ) गतिशीलः	(ङ) निरादरः
९.	(क) पूर्वदिशायाम् उदेति सूर्यः पश्चिमदिशायां च अस्तं गच्छति।	(ख) ४७६ तमे खिस्ताद्वे आर्यभटः जन्म लब्धवान्।			
	(ग) तस्य कर्मभूमिः पाटलिपुत्रमेव आसीत्।	(घ) आर्यभटस्य योगदानं गणितज्योतिषा सम्बद्धं वर्तते।			
	(ङ) आर्यभटः फलितज्योतिषशास्त्रे न विश्वसिति स्म।		(च) पृथ्वीसूर्योः मध्ये समागतस्य चन्द्रस्य छायापातेन सूर्यग्रहणं दृश्यते।		
	(छ) सः पण्डितमन्यानाम् उपहासपात्रः जातः।		(ज) अस्माकं प्रथमोपग्रहस्य नाम आर्यभटः इति कृतम्।		
१०.	(क) गणना	(ख) संसारे	(ग) आदित्यः	(घ) गतिहीनः	(ङ) आयौ
	(च) प्रदर्शितः	(छ) तिरस्कृताः	(ज) प्रथा		

१५. प्रहेलिकाः (पहेलियाँ)

१.	(क) करिणं	(ख) मृगात्	(ग) रामः	(घ) कातरः	(ङ) कंसम्
२.	(क) शीतलवाहिनी गङ्गा काशी।	(ख) कंबलवन्तं शीतम् न बाधते।		(ग) विद्या विद्वद्भिः सदा बन्द्या।	
	(घ) विष्णुपदं दुर्लभं प्रोक्तम्।	(ङ) युद्धे कातरजनः पलायनं कुर्यात्।			
३.	(क) नारिकेलः	(ख) नारिकेलः			
	पूर्णवाक्येन उत्तरत— (क) नारिकेलः जलेन युक्तो अपि न घटः।				
	निर्देशानुसारम् उत्तरत— (क) त्रिनेत्रधारी	(ख) नारिकेलाय			

४.	क.	(१) कस्मात्	(२)	कुलम्	(३)	किम्	(४)	सिंहः
	ख.	(१) कं	(२)	शीतलवाहिनी	(३)	के	(४)	बलवन्तं
	ग.	(१) किं	(२)	कस्य	(३)	कथं	(४)	शक्रस्य
५.	(क)	का विद्वद्भिः सदा वन्द्या।	(ख)	सिंहः केषाम् कुलं हन्ति।	(ग)	कस्मात् कस्तूरी जायते।		
	(घ)	सीता कासु शान्ता आसीत्।	(ङ)	कदा तक्रं पेयम्।				
६.	(क)	कः + हन्ति	(ख)	वृक्ष + अग्रवासी	(ग)	प्र + उक्तम्	(घ)	त्वक् + वस्त्रधारी
	(ङ)	गुण + उत्तमा						
७.	(क)	न	(ख)	आम्	(ग)	न्	(घ)	न
८.		मूलशब्दः		विभक्तिः		वचनम्		
	(क)	मृग		पञ्चमी		एकवचनम्		
	(ख)	विद्वान्		तृतीया		बहुवचनम्		
	(ग)	शक्र		षष्ठी		एकवचनम्		
	(घ)	किम्		षष्ठी		एकवचनम्		
९.	(क)	वन्दनीया	(ख)	मारयति	(ग)	वैनतेयः	(घ)	अजायत
	(ङ)	कथितम्	(च)	कठिनम्				

१६. वर्णविचारः (उच्चारणस्थानानि)

१.	(क)	मूर्धा	(ख)	ब्	(ग)	इ	(घ)	ड	(ङ)	कण्ठः
२.	(क)	कण्ठः	(ख)	दन्ताः/ नासिका	(ग)	ओष्ठौ	(घ)	दन्ताः	(ङ)	तालुः
३.	(क)	दन्ताः	(ख)	मूर्धा	(ग)	दन्तौष्ठौ	(घ)	ब्	(ङ)	कण्ठः
४.	(क)	आम्	(ख)	न	(ग)	आम्	(घ)	न	(ङ)	आम्
५.	(क)	अ + व् + ट + अ + ध् + य् + आ + य् + ई			(ख)	य् + द् + य् + अ + य + ई				
	(ग)	आ + श् + ई + र् + व् + आ + द् + अः			(घ)	क् + ऋ + ष् + अ + क् + अः				
	(ङ)	प् + र् + अ + य् + त् + न् + अः			(च)	प् + अ + र् + ई + क् + ष् + आ				
	(छ)	प् + उ + स् + त् + अ + क् + अ + म्			(ज)	ल् + अ + क् + ष् + य् + अ + म्				
६.	(क)	श्रीमान्	(ख)	त्रीणि	(ग)	कलङ्क	(घ)	वर्गम्	(ङ)	सम्राटः
	(च)	चन्द्रमा	(छ)	अभ्यास	(ज)	द्रष्टुम्	(झ)	मन्त्री	(ज)	प्रतीक्षा

१७. सन्धिः

१.	(क)	मनोहरः	(ख)	यद्यपि	(ग)	छात्रा आयान्ति	(घ)	आङ्गितः	(ङ)	सज्जनः
	(च)	उल्लेख	(छ)	कथावेव	(ज)	स्वागतम्	(झ)	मात्राज्ञा	(ज)	पुस्तकालयः
२.	(क)	एतत् + श्रुत्वा	(ख)	विद्या + अर्थी	(ग)	कः + अपि	(घ)	सुर + ईशः	(ङ)	दिक् + अम्बरः
	(च)	वृक्ष + छाया	(छ)	भो + अने	(ज)	नै + अकः	(झ)	भानु + उदय	(ज)	महा + ईश
	(ट)	हित + उपदेशः								
३.		सन्धि		सन्धे: नाम						
	(क)	हरये		अयादि सन्धि						
	(ख)	हिमालयः		दीर्घ सन्धि						
	(ग)	यद्यपि		यण् सन्धि						
	(घ)	प्रभोऽत्र		पूर्वरूप सन्धि						
	(ङ)	अन्वय		यण् सन्धि						
	(च)	भात्रादेश		यण् सन्धि						
	(छ)	तच्चित्रम्		शत्रुत्व सन्धि						
	(ज)	दण्डः		मोऽनुस्वार सन्धि						
	(झ)	वाढ़मयम्		जशत्व सन्धि						
	(ज)	नमस्ते		विसर्ग सन्धि						

४. (क) तथा + एव	(ख) इतस्तः	(ग) मुनीश	(घ) सः + अपि	(ङ) मत् + शरः
(च) नदीशः	(छ) तच्चत्रम्	(ज) कण्ठः	(झ) सदा + एव	(ञ) श्रुतिगच्छति
५. (क) वागीश	(ख) उल्लासः	(ग) सरोवरः	(घ) गुरु + आदेशः	(ङ) सत् + जनः
(च) पौ + अकः	(छ) सु + आगतम्	(ज) भानूदयः	(झ) विद्यालयः	(ञ) प्रति + एकम्

१८. शब्दरूप प्रकरणम्

१. (क) साधोः	(ख) पितृन्	(ग) मुन्योः	(घ) नद्याः	(ङ) मधुभ्याम्
(च) मातरि	(छ) लतानाम्	(ज) कविषु		
२. विभक्तिः	वचनम्			
(क) पञ्चमी/ षष्ठी	एकवचनम्			
(ख) सप्तमी	एकवचनम्			
(ग) चतुर्थी	एकवचनम्			
(घ) तृतीया	एकवचनम्			
(ङ) तृतीया	एकवचनम्			
(च) सप्तमी	एकवचनम्			
(छ) चतुर्थी	एकवचनम्			
(ज) तृतीया	एकवचनम्			
(झ) पञ्चमी/ षष्ठी	एकवचनम्			
(ञ) पञ्चमी/ षष्ठी	एकवचनम्			
३. एकवचनम् - (क)	मधुनः	(ग) लतायाः	(घ) नद्यै	(च) गच्छता
द्विवचनम् - (ङ)	पित्रोः	(छ) विद्वांसौ		(ज) राज्ञः
बहुवचनम् - (ख)	मातृभिः			
४. (क) मुनयः	(ख) कमलानि	(ग) गुरुम्	(घ) भानुम्	(ङ) मधुना
(च) पित्रा	(छ) मातुः	(ज) नद्याः	(झ) वृक्षेषु	(ञ) नद्याम्
५. (क) लतायाः	(ख) खगेषु	(ग) बसयानेन	(घ) मात्रे	(ङ) नद्याः
(च) वाटिकायाम्	(छ) नदीम्	(ज) वृक्षेषु	(झ) नदीषु	(ञ) गंगायाः
६. (क) गच्छन्ती	(ख) राज्ञि	(ग) राज्ञः	(घ) भवद्भ्यः	(ङ) विद्वांस
(च) विद्वान्	(छ) आत्मन्	(ज) भवतः	(झ) गच्छन्	

१९. शब्दरूपाणि (सर्वनाम्)

१. लिङ्ग - (ख)	दोनों लिंगों में	(ङ)	दोनों लिंगों में	(ख)	दोनों लिंगों में
(क) तया	(ख) त्वत्	(ग)	कस्य	(घ) एषाम्	(ङ) आवयोः
(च) काः	(ख) त्वयि	(ज)	ते		
२. एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्			
(क) तस्मात्	तास्याम्	तेभ्यः			
(ख) तस्याः	तयोः	तासाम्			
(ग) एषः	एतौ	एते			
(घ) मयि	आवयोः	अस्मासु			
(ङ) कम्	कौ	काम्			
(च) तुभ्यम्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्			
(छ) माम्	आवाम्	अस्मान्			
(ज) तत्	ते	तानि			
(झ) तत्	ते	तानि			
(ञ) तया	ताभ्याम्	ताभिः			

३.	मूलशब्दः	लिङ्गः	विभक्तिः	वचनम्	
	(क) अस्मद्	पु०/स्त्री० (दोनो में)	सप्तमी	एकवचनम्	
	(ख) युष्मद्	पु०/स्त्री० (दोनो में)	तृतीया	एकवचनम्	
	(ग) किम्	पुलिङ्ग	तृतीया	एकवचनम्	
	(घ) अस्मद्	पु०/स्त्री० (दोनो में)	चतुर्थी	एकवचनम्	
	(ङ) एतद्	स्त्रीलिङ्ग	सप्तमी	एकवचनम्	
	(च) तद्	पुलिङ्ग	षष्ठी	बहुवचनम्	
	(छ) किम्	पुलिंग	षष्ठी	बहुवचनम्	
	(ज) अस्मद्	पु०, स्त्री	पंचमी	बहुवचनम्	
	(झ) युष्मद्	पु०, स्त्री	षष्ठी	बहुवचनम्	
	(ज) अस्मद्	पु०, स्त्री	षष्ठी	बहुवचनम्	
४.	(क) अस्मिन्	(ख) तस्याः	(ग) केन	(घ) तव	(ङ) अनेकानि
	(च) युष्मभ्यम्	(छ) मम	(ज) केषाम्	(झ) मयि	(ज) तु॒यम्
५.	(क) तु॒यम्	(ख) ताः	(ग) तव	(घ) अस्माकम्	(ङ) कस्याम्
	(च) एतानि	(छ) त्वया	(ज) अस्यां	(झ) सा	(ज) एषा

२०. संख्यावाचकशब्दः

१.	(क) एकत्रिंशत्	(ख) पञ्च	(ग) पञ्चाशत्	(घ) एकादश	(ङ) द्वाविंशतिः
	(च) सप्तदश	(छ) शतम्	(ज) एकोनविंशतिः		
२.	(क) पञ्च	(ख) एका	(ग) द्वौ	(घ) तिस्रः	(ङ) सप्त
	(च) दश	(छ) शतम्	(ज) चत्वारः	(झ) नव	(ज) द्वादश
३.	(क) त्रयः	(ख) पञ्च	(ग) चत्वारि	(घ) चत्वारः	(ङ) शतम्
	(च) अष्टादश	(छ) पञ्चदश	(ज) तिस्रः	(झ) चत्वारः	(ज) दश
४.	(क) बालकौ	(ख) पुण्याणि	(ग) बालिकाः	(घ) मित्रे	(ङ) गायिका
	(च) पाण्डवाः				

२१. धातुरुपाणि

१.	मूलधातुः	लकारः	पुरुष	वचनम्	
	(क) पा	लृट्	उत्तम	बहुवचनम्	
	(ख) अस्	लोट्	प्रथम	एकवचनम्	
	(ग) कृ	लोट्	प्रथम	बहुवचनम्	
	(घ) मुद्	लट्	प्रथम	बहुवचनम्	
	(ङ) नम्	विधिलिङ्ग्	प्रथम	बहुवचनम्	
	(च) पा	लड्	उत्तम	द्विवचनम्	
	(छ) खाद्	विधिलिङ्ग्	उत्तम	एकवचनम्	
	(ज) गम्	लड्	प्रथम	बहुवचनम्	
	(झ) नम्	लृट्	मध्यम	द्विवचनम्	
२.	(क) सन्तु	(ख) इच्छावः	(ग) क्रीडः	(घ) स्मरिष्यन्ति	(ङ) नंस्यामि
	(च) भक्षयतम्	(छ) अवदाम	(ज) स्थास्यतः	(झ) लिख्यथ	(ज) अजिप्रम्
३.	(क) पास्यति	(ख) पठिष्यति	(ग) अनृत्यत्	(घ) चलन्ति	(ङ) क्रीडथः
	(च) नमतम्	(छ) वदेयुः	(ज) हसाव		
४.	(क) पृच्छतु	(ख) लेखिष्यामि	(ग) नंस्यामः	(घ) अनृत्यत्	(ङ) गमिष्यसि
	(च) कुर्यामि	(छ) लभेयुः	(ग) रोचन्ते	(घ) भजेम	(ज) पक्ष्यति

५. (क) अगच्छत्	(ख) सन्ति	(ग) लेखिष्यामि	(घ) याचन्ति	(ङ) अवसत्
(च) पठेयुः	(छ) भवन्तु	(ग) भवेत्	(घ) आसीत्	(ज्र) अपिबत्

२२. कारक तथा उपपदविभक्ति

१. (क) करण, तृतीया	(ख) अधिकरण, सप्तमी	(ग) संबोधन	(घ) सम्बन्ध, षष्ठी	(ङ) कर्म, द्वितीया
(च) अपादान, पंचमी	(छ) संप्रदान, चतुर्थी	(ज) कर्ता, प्रथमा		
२. विभक्तिः वचनम्				
(क) तृतीया	बहुवचनम्			
(ख) तृतीया	एकवचनम्			
(ग) सप्तमी	एकवचनम्			
(घ) पंचमी	बहुवचनम्			
(ङ) षष्ठी	बहुवचनम्			
(च) चतुर्थी	एकवचनम्			
(छ) चतुर्थी	एकवचनम्			
(ज) षष्ठी	बहुवचनम्			
(झ) तृतीया	एकवचनम्			
(ज) षष्ठी / सप्तमी	द्विवचनम्			
३. (क) पठनात्	(ख) तडागम्	(ग) शिवाय	(घ) गृहात्	(ङ) पठने
(च) विद्यालयं	(छ) पुत्रे	(ज) स्वगृहं	(झ) कंसाय	(ज) वृक्षस्य
४. (क) मयि	(छ) ग्रामं	(ग) रावणाय	(घ) कवीनां	(ङ) कोलाहलेन
(च) मातरं	(छ) भोजनात्	(ज) रामेण	(झ) वीणावादने	(ज) मार्गम्

२३. समयलेखनम्

१. (क) त्रिवादनम्	(ख) सपाद अष्टवादनम्	(ग) पादोन नववादनम्	(घ) द्वादश वादनम्	(ङ) सार्ध द्विवादनम्
२. (क) रमा प्रातः सार्ध पञ्चवादने उत्तिष्ठति।		(ख)	सा अष्टवादने विद्यालयं गच्छति।	
(ग) सा अपराह्ने सपाद त्रिवादने विद्यालयात् आगच्छति।		(घ)	सा अपराह्ने चतुर्वादने च गृहकार्य करोति।	
(ङ) रमा सायं पञ्चवादने क्रीडति।				
३. (क) मोहनः सार्ध सप्तवादने विद्यालये गच्छति।		(ख)	सोहनः पादोन द्विवादने विद्यालयात् आगच्छति।	
(ग) सीता प्रातः सपाद पञ्चवादने उत्तिष्ठति।		(घ)	सा प्रातः पादोन षड्वादने ईश्वरं भजति।	
(ङ) सुरेशः सायं चतुर्वादने गृहकार्य करोति।		(च)	पूजा प्रातः षड्वादने देवालयं गच्छति।	
(छ) रमेशः सार्ध चतुर्वादने व्यायामं करोति।		(ज)	रीमा सपाद एकवादने भोजनं पचति।	
(झ) सा सायं सार्ध पञ्चवादने भ्रमणाय गच्छति।		(ञ)	सोहनः सायं पादोन पंचवादने क्रीडति।	
४. (क) पञ्च	(ख) पादोन अष्ट	(ग) सपाद द्वि	(घ) सार्ध त्रि	(ङ) सार्ध षट्

२४. वाच्य परिवर्तनम्

१. (क) त्वया पत्रं लिख्यते।	(ख) तेन विद्यालयः गम्यते।	(ग) एकेन चन्द्रेण तमः हन्यते।	(घ) बालिकाभ्यां फलं खाद्यते।
(ङ) ताभिः कार्यं क्रियते।	(च) बालकेन जलं पीयते।	(छ) मोहनेन गीतं गीयते।	(ज) बालिकया कथा पट्यते।
(झ) छात्रया प्रश्नं पृच्छ्यते।	(ज) कृष्णेन लेखः लिख्यते।		
२. (क) रामः गीतं गायति।	(ख) अहम् ईश्वरं नमामि।	(ग) छात्रः पुस्तकं पठति।	(घ) मोहनः लेखं लिखति।
(ङ) रमा कार्यं करोति।	(च) छात्रः विद्यालयं गच्छन्ति	(छ) त्वं कन्दुकेन क्रीडसि।	(ज) अहं पत्रं लिखामि।
(झ) मेघाः जलं वर्षन्ति	(ज) क्रोधः ज्ञानं नशयति।		
३. (क) छात्रेण पट्यते।	(ख) बालकैः हस्यते।	(ग) त्वया क्रीड्यते	(घ) मयूरेण नृत्यते।
(ङ) बालकैः गम्यते।	(च) खगैः उड्डीयते।	(छ) बालकैः गम्यते।	(ज) कृष्णेन लिख्यते।
(झ) लतया गीयते।			

४. (क) मोहनेन पुस्तकं पठ्यते। (ख) बालिकया जलं पीयते। (ग) सः हसति। (घ) रामेण पाठः स्मर्यते।
 (ड) सोहनः लेखं लिखति। (च) त्वया कन्दुकः क्रीड्यते। (छ) बालकः गच्छति। (ज) अहं हसामि।
 (झ) तैः विद्यालयं गम्यते। (ज) छात्राः भ्रमन्ति।

२५. अव्ययपदानि

- | | | | | |
|----------------------|------------|------------|---------------|-------------|
| १. (क) इतस्तः: | (ख) उच्चैः | (ग) तीव्रं | (घ) ह्यः | (ङ) बहिः |
| २. (क) उच्चैः | (ख) पुरतः | (ग) विना | (घ) कदा | (ङ) प्रातः |
| ३. (क) इतस्तः/परितः: | (ख) अद्य | (ग) श्वः | (घ) प्रति | (ङ) इदानीम् |
| ४. (क) इतस्तः/तत्र | (ख) कदा | (ग) कदापि | (घ) यथा / तथा | (ङ) सर्वत्र |

२६. समास-प्रकरणम्

१. विग्रह	समासस्य नाम			
(क) नगरस्य समीपम्	अव्ययीभाव			
(ख) फलस्य अभाव	अव्ययीभाव			
(ग) बलम् अनतिकम्य	अव्ययीभाव			
(घ) रुपस्य योग्यम्	अव्ययीभाव			
(ङ) चित्रेण सहितम्	अव्ययीभाव			
(च) ग्रहं गतः	द्वितीया तत्पुरुष			
(छ) पाठायशाला	चतुर्थी तत्पुरुष			
(ज) राम च लक्ष्मणः च	द्वन्द्व			
(झ) सप्तानाम् अह्नाम् समाहार	द्विगु			
(ज) कार्ये कुशलः	सप्तमी तत्पुरुष			
२. समास पद	समासस्य नाम			
(क) कुम्भकारः	उपपद समास			
(ख) उपगुरुः	अव्ययी भाव			
(ग) महात्मा	बहुब्रीहि			
(घ) दशाननः	बहुब्रीहि			
(ङ) पाणिपादम्	द्वन्द्व (समाहार द्वन्द्व)			
(च) वृक्षपतिः	पंचमी तत्पुरुष			
(छ) जलदः	उपपद तत्पुरुष			
(ज) सिंह पुरुषः	कर्मधारय			
(झ) प्रतिक्षणम्	अव्ययीभाव			
(ज) रथस्य पश्चात्	अव्ययीभाव			
३.				
(क) कन्दं च मूलं च फलं च	(ख) रामसीते	(ग) पाणिपादम्	(घ) नीलः कण्ठः यस्य सः:	
(ड) पञ्चवटी	(च) चन्द्रमुखी	(छ) उपयमुनम्	(ज) दिनं दिनं प्रति	(ङ) सन्नेहम्
४.				
(क) पितरौ	(ख) दशाननः	(ग) नगरस्य समीपम्	(घ) शक्ति अनतिकम्य	
(ड) उपवृक्षम्	(च) नीलानि कमलानि	(छ) कुम्भं करोति इति	(ज) न शिक्षिता	(ङ) महात्मा
(ज) मृगस्य पश्चात् इति				

२७. प्रत्ययाः

- | | | | | |
|--------------------|------------------|------------------|-------------------|------------------|
| १. (क) खादितः | (ख) नमनीया | (ग) सेवमानम् | (घ) पठन् | (ङ) शीलवान् |
| (च) दैनिक | (छ) गत्वा | (ज) नायिका | (झ) रक्षितुम् | (ज) ज्ञानिनः |
| २. (क) हस् + कववतु | (ख) गुण + डीप | (ग) गोप + डीप | (घ) पठ + अनीयर | (ङ) मूषक + टाप् |
| (च) नौ + ठक् | (छ) इतिहास + ठक् | (ज) स्मृ + अनीयर | (झ) भ्रम + तुमुन् | (ज) ज्ञा + कत्वा |

- | | | | | |
|--|------------------|--|-------------|--------------------|
| (ट) प्र + नम + ल्यप् | (ठ) वच् + कत्वा | (ड) निः + गम् + ल्यप् (ठ) | गम् + कत् | (ण) सह + शानच |
| (त) खाद् + तुमुन् | (थ) ग्रह + कत्वा | (द) आ + गम् + ल्यप् (ध) | सह + तुमुन् | (न) आ + दा + ल्यप् |
| ३. (क) बालकः 'पठ् + कत्वा' विद्यालयं गच्छति। | | (ख) रामः 'पठ् + तुमुन्' वाचनालयं गच्छति। | | |
| (ग) रामा 'चतुर + टाप्' बालिका अस्ति। | | (घ) छात्रै पाठः पठ् + अनीयर। | | |
| (ङ) बालकः क्रीडित्वा गृहम् गमिष्यति। | | (च) पठन् बालकः लिखति। | | |
| (छ) मञ्चे गायक + टाप् गीतं गायति। | | (ज) मम देशः शक्तिमान् भवेत्। | | |
| (झ) मोहनः भोजनम् कृ + कत्वा गमिष्यति। | | (ञ) देवं सम् + पूज् + ल्यम् पाठं पठ। | | |
| (ट) रामः वनं 'गम् + कत्'। | | (ठ) शिशुः मोदकं (दृश् + कत्वा) प्रसीदति। | | |
| (ङ) विद्यायाः महत् + त्व को जानति। | | (ठ) नमन्ति 'गुण + णिनि' जनाः। | | |
| (ण) 'शीतलता' चन्द्रस्य गुणः अस्ति। | | | | |

२८. अशुद्धिशोधनम्

- | | | | |
|-------|---------------------------------------|--|----------------------------------|
| १. क. | (क) बालकाः विद्यालयं गच्छन्ति। | (ख) मयूरौ नृत्यतः। | (ग) त्वम् पुस्तकं पठसि |
| | (घ) अहम् भोजनं खादामि। | (ङ) भवान् कुत्र गच्छति। | |
| ख. | (क) सः लेखं लिखसि। | (ख) भवान् विद्यालयं गच्छति। | (ग) मोहनः सत्यं वदति। |
| | (घ) अहं गीतं गायामि। | (ङ) वृक्षात् पत्राणि पतन्ति। | |
| ग. | (क) वृक्षात् फलानि पतन्ति। | (ख) सः मम मित्रम् अस्ति। | (ग) अहम् पाठम् पठामि |
| | (घ) मम गृहम् सुन्दरम् अस्ति। | (ङ) सीता रामस्य प्रिया अस्ति। | |
| घ. | (क) सर्वाः बालिकाः गच्छन्ति। | (ख) उद्याने सुन्दराणि पुष्पाणि विकसन्ति। | (ग) सः निपुणः बालकः अस्ति। |
| | (घ) चतुरा बालिका पठति। | (ङ) गुरुवासरे पीतं वस्त्रं धारय। | |
| ङ. | (क) शिवस्य त्रीणि नेत्राणि सन्ति। | (ख) पाण्डवाः पञ्च आसन्। | (ग) एका कन्या पठति। |
| | (घ) मम पाश्वे शतम् पुस्तकानि सन्ति। | (ङ) त्रयः बालकाः गच्छन्ति। | |
| च. | (क) अहं ह्यः विद्यालयं अगच्छम। | (ख) सुरेशः लेखं लेखिष्यति। | (ग) सा श्वः अगच्छत। |
| | (घ) बाला भोजनं पक्ष्यति। | (ङ) मोहनः श्वः श्रीनगरं आगमिष्यति। | |
| छ. | (क) अश्वः पादैः धावति। | (ख) गृहात् बहिः वृक्षः अस्ति। | (ग) माता पुत्रे स्निहयति। |
| | (घ) देवालयं परितः वृक्षाः सन्ति। | (ङ) गड्गा हिमालयात् प्रभवति। | |
| २. | (क) बालिकाः विद्यालयं गच्छन्ति। | (ख) सः पुस्तकं पठति। | (ग) भिक्षुकः नेत्रेण काणः अस्ति। |
| | (घ) सर्वे बालकाः क्रीडन्ति। | (ङ) कक्षायां तिसः बालिकाः सन्ति। | (च) बालकाः पाठं पठन्ति। |
| | (छ) ताः गीतं गास्यन्ति। | (ज) उद्याने सुन्दराणि पुष्पाणि सन्ति। | (झ) महयम् संस्कृतं रोचते। |
| | (ज) रामायणं मम प्रियं पुस्तकम् अस्ति। | (ट) सः बालकः खादति। | (ठ) त्वं कुत्र गच्छसि। |
| | (ङ) ताः महिलाः गृहम् गच्छन्ति। | (ङ) यूयम् गुरुन् नमथ। | (ण) भवान् कुत्र गच्छति। |

२९. चित्रवर्णनम्

- | | | |
|--|---|---|
| १. (क) अस्मिन् चित्रे विद्यालयः अस्ति। | (ख) विद्यालयस्य भवनं विशालम् अस्ति। | (ग) बालकाः पादकन्दुकेन खेलन्ति। |
| (घ) विद्यालये क्रीडाक्षेत्रम् अपि अस्ति। | (ङ) बालिके परस्पर वार्तालापं कुरुतः। | |
| २. (क) एतत् चित्रम् जन्तुशालायाः अस्ति। | (ख) अस्मिन् चित्रे जनाः इतस्ततः भ्रमन्ति। | (ग) जनाः परस्परं वार्तालापं कुर्वन्ति। |
| (घ) पञ्चरे एकः उष्ट्रग्रीवः अपि अस्ति। | (ङ) पञ्चरे एकः सिंहः अपि अस्ति। | |
| ३. (क) एतत् चित्रम् पर्यावरणस्य अस्ति। | (ख) अस्मिन् चित्रे एका नदी अस्ति। | (ग) एका महिला नद्याः जले अवकरं क्षिपति। |
| (घ) द्वौ बालौ नद्याः जले स्नानं कुरुतः। | (ङ) रजकः नद्याः जले वस्त्राणि क्षालयति। | |
| ४. (क) एतत् होलिकोत्सवस्य चित्रम् अस्ति। | (ख) बालिका बालकः च वर्णः क्रीडतः। | |
| (ग) बालकः पिचकारी-यन्त्रस्य प्रयोगम् अपि कुर्वन्ति | | (घ) तौ परस्परं वर्णमयं जलं क्षिप्त्वा प्रसन्नाः भवन्ति। |
| (ङ) तौ गृहात् बहिः क्रीडतः। | | |
| ५. (क) अस्मिन् चित्रे उद्यानम् अस्ति। | (ख) उद्याने वृक्षः अपि अस्ति। | (ग) उद्याने पुष्पाणि विकसन्ति। |
| (घ) द्वौ बालकौ पादकन्दुकेन क्रीडतः। | (ङ) उद्याने दम्पती भ्रमतः। / उद्याने महिला पुरुषः च भ्रमतः। | |

३०. अनुवादः

लट् लकार (वर्तमान काल)

(क) अजयः पठति।	(ख) विवेकः लिखति।	(ग) वयम् गच्छामः।	(घ) मेघः गर्जन्ति।
(ङ) गंगा हिमालयात् निःसरति।	(च) मयूरः नृत्यति।	(छ) युवाम् कुत्र गच्छथः।	(ज) कृष्णः पत्रं लिखति।
(झ) वयम् धावामः।	(ज) सीता भोजनं करोति।	(ट) बालः पादकन्दुकेन क्रीडन्ति।	
(ठ) वयम् गच्छामः।	(ड) त्वम् हससि।	(ढ) आवाम् धावावः।	(ण) अहम् खादामि।

लङ् लकार (भूत काल)

(क) सः जोधपुरे अगच्छत्।	(ख) रामः रावर्ण अमारयत्।	(ग) सोहनः ग्रामम् अगच्छत्।	(घ) अहम् पत्रम् अलिखम्।
(ङ) वयम् पत्रम् अपठाम्।	(च) छात्र पाठशालां अगच्छत्।	(छ) मोहनः सर्पम् अपश्यत्।	
(ज) युवाम् भोजनम् अखादतम्।	(झ) पशवः जलम् अपिबन्।	(ज) मालकारः वृक्षेभ्यः जलम् अयच्छत्।	
(ट) बालाः क्रीडाक्षेत्रे अक्रीडन्।	(ठ) मुकेशः पाठं अपठत्।	(ड) वयम् तव पत्रम् अपठाम।	
(ण) अम्मा भोजनम् अपचत्	(ढ) युवाम् गृहम् अगच्छतम्।		

लृद् लकार (भविष्यत् काल)

(क) सीमा कवितां पठिष्यति।	(ख) ते गीतं गास्यन्ति।	(ग) अहं रामायणं पठिष्यामि।	(घ) सुरेशः पत्रं लेखिष्यति।
(ङ) माता भोजनं पक्ष्यति।	(च) बालकं दुग्धं पास्यति।	(छ) सः श्वः किं करिष्यति।	(ज) तौ जोधपुरं गमिष्यतः।
(झ) भक्तः ईश्वर भजिष्यति	(ज) यूयम् भोजनं खादिष्यथा।	(ट) वयम् जन्मुशालां गमिष्यामः।	(ठ) ते पाठं स्मरणं करिष्यन्ति।
(ट) अहं प्रातः विद्यालयं गमिष्यामि।		(ढ) ते पाठं पठिष्यन्ति।	

लोट् लकार (अनुज्ञा / आदेश)

(क) लोभं मा कुरा।	(ख) सर्वदा सुखी भव।	(ग) सुरेशः पत्रं लिखतु।	(घ) त्वम् आपणं गच्छ।
(ङ) सदा सत्यं वद।	(च) बालाः क्रीडाक्षेत्रे खेलन्तु।	(छ) त्वं पाठं पठ।	(ज) त्वं आपणं गच्छ।
(झ) सः पाठं पठतु।	(ज) असत्यं न वद।	(ट) शीघ्र मा/ न कुरु।	(ठ) यूयं पाठशालां गच्छत।
(ट) सः गीतां पठतु।	(ढ) वयं ईश्वरं स्मरणं स्मराम।	(ण) युवां उच्चैः मा वदतम्।	

विधिलिङ् लकार (विधि / सम्भावना)

(क) वयं प्रातः पठेम।	(ख) सः स्वपाठं पठेत्।	(ग) युवां पत्रं लिखतेम्	(घ) ते पाठं स्मरन्तु।
(ङ) सः व्यायाम् कुर्यात्।	(च) अहं पत्रं लिखेयम्।	(छ) सः उच्चैः न हि ब्रूयात्।	(ज) यूयं विद्यालयं गच्छेत।
(झ) वयं देशस्य रक्षा करवाम।	(ज) अहं पाठं स्मरेयम्।		

कर्ता कारक (प्रथमा विभक्ति)

(क) सोहनः खेलति।	(ख) सः लिखति।	(ग) मेघः गर्जन्ति।	(घ) सुशीला गच्छति।
(ङ) अहं वदामि।	(च) मयूरः राष्ट्रीयः पक्षी अस्ति।	(छ) तौ गायतः।	(ज) ते धावन्ति।
(झ) पिकः कृष्णः भवति।	(ज) सा लिखति।		

कर्म कारक (द्वितीया विभक्ति)

(क) अमरः पाठशालां गच्छति।	(ख) सः गृहम् गच्छति।	(ग) रामः मधुरं वदति।	(घ) वयं संस्कृतं पठामः।
(ङ) बालकाः भल्लूकं पश्यन्ति।	(च) रामः रावर्ण अमारयत्।	(छ) सैनिकाः देशं रक्षन्ति।	(ज) रमा पूजां करोति।
(झ) पथिकः ग्रामं गच्छति।	(ज) छात्रः गुरुं प्रश्नं पृच्छति।		

करण कारक (तृतीया विभक्ति)

(क) छात्रः द्विचक्रिकया पाठशालां गच्छति।	(ख) नरः पदभ्यां धावति।	(ग) बालकाः पादकन्दुकेन क्रीडन्ति।	
(घ) सीता रामेण सह वनम् अगच्छत्।	(ङ) रामः रावर्ण बाणेन अमारयत्।	(च) सः कलमेन लिखति।	
(छ) भिक्षुकः पादेन खञ्जः अस्ति।	(ज) रामः बसेन जोधपुरं गच्छति।	(झ) बालाः कन्दुकेन क्रीडन्ति।	
(ज) सुलेखा भ्रात्रा सह आपणं गच्छति।			

सम्प्रदान कारक (चतुर्थी विभक्ति)

(क) माता निर्धनाय वस्त्रं ददति।	(ख) सज्जनाः परोपकाराय भवन्ति।	(ग) पिता पुत्राय कृध्यति।	
(घ) महयं मोदकानि रोचन्ते।	(ङ) सः भ्रमणाय गच्छति।	(च) नृपः ब्राह्मणाय धनं ददति।	

(छ) माता पुत्राय दुर्गं ददाति।

(ज) नृपः कवये धनं ददाति।

अपादान कारक (पञ्चमी विभक्ति)

(क) वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।

(घ) छात्राः पाठशालायाः आगच्छन्ति।

(छ) मोहनः सोहनात् बुद्धिमत्।

(ज) मेघात् जलबिन्दवः पतन्ति।

(ज) छात्राः पठनाय पाठशालां गच्छन्ति।

(झ) साधुः भोजनाय ग्रामं गच्छति।

(ख) गंगा हिमालयात् निःसरति।

(ड) देवः अश्वात् पतति।

(ज) दीपकः द्विचक्रिकायाः पतति।

(ग) पथिकः ग्रामात् आगच्छति।

(च) सः नगरात् आगच्छति।

(झ) सर्पः बिलात् निःसरति।

सम्बन्ध कारक (षष्ठी विभक्ति)

(क) दशरथः अयोध्यायाः राजा आसीत्।

(घ) अयम् रामस्य शाटिका अस्ति।

(छ) एषा पाठशालायाः पुस्तकालयः अस्ति।

(ज) रावणः लंकायाः राजा आसीत्।

(ख) सीता गीतायाः भगिनी अस्ति।

(ड) गंगायाः जलं पवित्रं भवति।

(ज) सीता रामस्य पत्नी आसीत्।

(ग) हिमालयः पर्वतानां राजा अस्ति।

(च) राजा दशरथस्य चत्वारः पुत्राः आसन्।

(झ) सुरेशस्य गृहं सुन्दरम् अस्ति।

अधिकरण (सप्तमी विभक्ति)

(क) लतायाम् पुष्पाणि विकसन्ति

(घ) अकाशे खगः उत्पतन्ति।

(छ) माता पुत्रे स्निहयति।

(ज) वृक्षे वानराः कूर्दन्ति।

(ख) खगः नीडेषु निवसन्ति।

(ड) सरोवरे पुष्पाणि विकसन्ति।

(ज) पुष्पेषु भ्रमराः गुजन्ति।

(ग) वने पशवः निवसन्ति।

(च) रामः ग्रामे निवसति।

(झ) मोहनः पठने निपुणः अस्ति।

३१. अनुच्छेद-लेखनम्

१.	(1) जीवने	(2) शासनस्य	(3) नियन्त्रणं	(4) क्षेत्रे	(5) नियमानां
२.	(1) सप्ततिः	(2) सहस्रद्वयं	(3) उद्यानम्	(4) पुस्तकालयः	(5) गणितं
३.	(1) धर्मः	(2) परोपकारम्	(3) प्रकाशः	(4) परोपकाराय	(5) जीवनं
४.	(1) भारतस्य	(2) साहित्यं	(3) वेदाः	(4) अनेकभाषाणां	(5) पाणिनिः
५.	(1) विश्वविष्ण्यातः	(2) सभापण्डितः	(3) बाल्यकाले	(4) विद्योत्तमा	(5) विद्वान्
६.	(1) कोलकाता	(2) विश्वनाथदत्तः	(3) मेघावी	(4) नरेन्द्रनाथः	(5) शिकागो

३२. वार्तालापः

१. क.	(i) रामायणम्	(ii) श्रीरामस्य	(iii) प्राप्यते	(iv) सप्त	(v) आसीत्
ख.	(i) जनकः	(ii) ज्वरेण	(iii) अधुना	(iv) श्वः	(v) गच्छामि
ग.	(i) दीपावली	(ii) शाटिकाम्	(iii) मिष्ठानं	(iv) बान्धवेभ्यः	(v) वितरिष्यामः
घ.	(i) गच्छसि	(ii) पाठशालाम्	(iii) तव	(iv) पाठशालायाम्	(v) एका
ड.	(i) अगच्छः	(ii) अहम्	(iii) छात्राणाम्	(iv) ज्ञातुम्	(v) अनिर्वायः

३३. पत्र-लेखनम्

१.	(i) सेवायाम्	(ii) प्राधानाचार्यः	(iii) विद्यालयः	(iv) सविनयम्	(v) ज्वरपीडितः
	(vi) आगन्तुम्	(vii) मह्यम्	(viii) अवकाशम्	(xi) अनुगृहणन्तु	(x) आज्ञाकारी
२.	(i) महोदयाः	(ii) मान्यवर	(iii) निवेदनम्	(iv) छात्रः	(v) वेतनं
	(vi) अनुजः	(vii) पठतः	(viii) निर्वाहः	(ix) याचे	(x) प्रार्थनां
३.	(i) मान्यवर	(ii) अस्ति	(iii) विद्यालये	(iv) स्थानान्तरणं	(v) परिवारः
	(vi) वत्स्यति	(vii) प्रवेशम्	(viii) चरित्रप्रमाणपत्रम्	(ix) अनुगृहणन्तु	(x) शिष्यः
४.	(i) प्रियमित्र	(ii) तत्रास्तु	(iii) समाचारं	(iv) अहम्	(v) आगामीमासस्य
	(vi) जयपुरनगरात्	(vii) त्रिचतुर्दिनानि	(viii) उपस्थितिः	(ix) सादरं	(x) भवत्सुहृद्
५.	(i) पितृमहोदयाः	(ii) नमोनमः	(iii) भवतः	(iv) तत्रास्तु	(v) शैक्षिकयात्रायै
	(vi) ऐतिहासिकम्	(vii) यात्राव्यार्थम्	(viii) भवन्तः	(ix) अम्बायै	(x) भवदीयः

३४. अपठित-अवबोधनम्

१. एकपदेन उत्तर-	(क)	उद्यानम्	(ख)	हंसः	(ग)	सिद्धार्थस्य	(घ)	भक्षकात्
पूर्णवाक्येन उत्तर-	(क)	सिद्धार्थः उच्चैः अवदत्, “न दास्यामि इमं हंसम्, यतः अहम् अस्य रक्षकः”	(ख)	देवदत्तः सिद्धार्थ उक्तवान् “भो सिद्धार्थ! एषः हंसः मया हतः! इमं हंसं महयं यच्छ।”	(ग)			
निर्देशानुसारम् उत्तर-	(क)	सिद्धार्थः	(ख)	भक्षक	(ग)	राजकुमारः	(घ)	सप्तमी
२. एकपदेन उत्तर-	(क)	महर्षिः वाल्मीकिः	(ख)	रामायणः	(ग)	सीताम्	(घ)	रामस्य
पूर्णवाक्येन उत्तर-	(क)	श्री रामः सुग्रीवः, हनुमान, अंगदादयः वानराणां साहाय्येन रावणं हतवान्।	(ख)	रामायणं पठित्वा जनाः शान्तिप्रिया सदाचारिणः च भवन्ति।				
निर्देशानुसारम् उत्तर-	(क)	श्रीरामः/ रामायणम्	(ख)	शान्तिप्रिया	(ग)	कत्वा	(घ)	वर्तते।
३. एकपदेन उत्तर-	(क)	विविधानि	(ख)	अतीव मधुरम्	(ग)	अनेके वृक्षाः	(घ)	वृक्षे
पूर्णवाक्येन उत्तर-	(क)	पुष्पाणां सुगन्धेन वातावरणम् आनन्दमयं भवति।	(ख)	तस्मिन् अनेकानि पुष्पाणि विकसन्ति।				
निर्देशानुसारम् उत्तर-	(क)	तंत्र	(ख)	पुष्पाणि	(ग)	अत्र, अपि, च	(घ)	तयप्
४. एकपदेन उत्तर-	(क)	मन्त्रमतिः	(ख)	जलेन	(ग)	विद्यालयात्	(घ)	कूपम्
पूर्णवाक्येन उत्तर-	(क)	आत्मसम्मानेन वज्ज्ञतः वोपदेवः अचिन्त्यत, ‘नूनम् अहं मूर्खः अस्मि, मम भाग्ये विद्या नास्ति।’	(ख)	महिलायाः घटं स्थापनेन शिलायां गर्तः अभवत्।				
निर्देशानुसारम् उत्तर-	(क)	महान्	(ख)	बुद्धिः	(ग)	सः (वोपदेवः)	(घ)	मूर्खः
५. एकपदेन उत्तर-	(क)	पवित्रतमा	(ख)	गंगोत्री	(ग)	अतिपवित्रं	(घ)	गंगा
पूर्णवाक्येन उत्तर-	(क)	गंगायाः तटे हरिद्वारं, ऋषिकेशः, प्रयागः, काशी च प्रसिद्धानि तीर्थस्थानानि सन्ति।	(ख)	गंगायाः तटे हरिद्वारं, ऋषिकेशः, प्रयागः, काशी च प्रसिद्धानि तीर्थस्थानानि सन्ति।				
निर्देशानुसारम् उत्तर-	(क)	गंगायै	(ख)	गंगा	(ग)	निर्गच्छति	(घ)	परलोकम्
६. एकपदेन उत्तर-	(क)	15 अक्टूबर, 1931 तमे वर्षे	(ख)	भगिन्याः	(ग)	सामान्ये परिवारे	(घ)	भगवद्गीतायाः
पूर्णवाक्येन उत्तर-	(क)	1931 तमे वर्षे अक्टूबर मासस्य पञ्चदश तारिकायां पुण्यतीर्थे रामेश्वरस्य एकस्मिन् सामान्ये परिवारे अभवत्।	(ख)	सः स्वप्रतिभया, प्रसिद्धमेण दृढ़संकल्पेन च विज्ञानस्य क्षेत्रे—लब्धप्रतिष्ठः वैज्ञानिकः अभवत्।				
निर्देशानुसारम् उत्तर-	(क)	अब्दुलकलामाय	(ख)	कृ	(ग)	षष्ठी	(घ)	वीणावादने + अपि
७. एकपदेन उत्तर-	(क)	कालिदासस्य	(ख)	प्रकृतिचित्रणम्	(ग)	उपमायाः	(घ)	चरित्रचित्रणे
पूर्णवाक्येन उत्तर-	(क)	कालिदास—मतेन प्रेम निर्मलं पुष्टं च भवति।	(ख)	कालिदासस्य लोकप्रियतायाः कारणम् – प्रसादगुणयुता ललिता परिष्कृता शैली अस्ति।				
निर्देशानुसारम् उत्तर-	(क)	महाकविः	(ख)	कालिदासाय	(ग)	कालिदासः	(घ)	प्रसिद्धः
८. एकपदेन उत्तर-	(क)	विशालः	(ख)	वानरः	(ग)	भूमौ	(घ)	नर्मदातीरे
पूर्णवाक्येन उत्तर-	(क)	वानरः अचिन्त्यत् – एते खगाः माम् उपहसन्ति।	(ख)	खगाः वानरे दृष्ट्वा अकथयन्—भो वानर! त्वं कष्टम् अनुभवसि। त्वं किमर्थं स्वगृहं न रचयसि।				
निर्देशानुसारम् उत्तर-	(क)	उपरि	(ख)	कत्वा	(ग)	वृक्षः	(घ)	क्रद्धः + अभवत्